

बुङ्गला अजब बन्या महाराज जा में नारायण बोले :<  
बुङ्गला अजब बन्या महाराज जा में नारायण बोले ॥ टेर ॥  
इस बुङ्गले में चोपड़, मांडी खेले पांच-पचीसा,  
कोई तो बाजी हार चल्यो है, कोई चल्यो जुग जीता ॥ बुङ्गला ॥  
पंच तत्व को ईट बनाई तीन गुनों का गारा ।  
छत्तीसुँ की छांत बनाई, चेतन है चेजारा ॥ बुङ्गला ॥  
इस बुङ्गले के दस दरवाजे, बीच पवन का खम्भा,  
आवत जावत कछु नहीं दीखै, ये भी एक अचम्भा ॥ बुङ्गला ॥  
इस बुङ्गले में पातर नाचे, मनबा ताल बजावे,  
सुरत निरत का बाँध घूंघरू, राग छत्तीसूँ गावे ॥ बुङ्गला ॥  
कहे मछन्दर सुन जती गोरख जिन ये बुङ्गला गाया  
इस बंगले का गावनहारा, बहुरी जनम नहीं पाया ॥ बुङ्गला ॥  
जय श्री नाथजी की.